

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(पष्ठ खण्ड)

[अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल,
महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहणपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)



अनुवादक—

प्रण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'



अनुशासनपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(दान-धर्म-पर्व)				
१-	युधिष्ठिरको सान्त्वना देनेके लिये भीष्मजीके द्वारा गौतमी ब्राह्मणी, व्याध, सर्प, मृत्यु और कालके संवादका वर्णन ...	५४२५	१७-	शिवसहस्रनामस्तोत्र और उसके पाठका फल	५५१३
२-	प्रजापति मनुके वंशका वर्णन, अग्निपुत्र सुदर्शनका अतिथि-सत्काररूपी धर्मके पालनसे मृत्युपर विजय पाना ...	५४३१	१८-	शिवसहस्रनामके पाठकी महिमा तथा ऋषियोंका भगवान् शङ्करकी कृपासे अभीष्ट सिद्धि होनेके विषयमें अपना-अपना अनुभव सुनाना और श्रीकृष्णके द्वारा भगवान् शिवजीकी महिमाका वर्णन ...	५५२९
३-	विश्वामित्रको ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति कैसे हुई— इस विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न ...	५४३८	१९-	अष्टावक्र मुनिका वदान्य ऋषिके कहनेसे उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान, मार्गमें कुबेरके द्वारा उनका स्वागत तथा स्त्रीरूपधारिणी उत्तर दिशाके साथ उनका संवाद ...	५५३४
४-	आजमीढके वंशका वर्णन तथा विद्वामित्रके जन्मकी कथा और उनके पुत्रोंके नाम ..	५४३९	२०-	अष्टावक्र और उत्तर दिशाका संवाद ...	५५४०
५-	स्वामिभक्त एवं दयालु पुरुषकी श्रेष्ठता बतानेके लिये इन्द्र और तोतेके संवादका उल्लेख ...	५४४३	२१-	अष्टावक्र और उत्तर दिशाका संवाद; अष्टावक्रका अपने घर लौटकर वदान्य ऋषिकी कन्याके साथ विवाह करना ...	५५४२
६-	दैवकी अपेक्षा पुरुषार्थकी श्रेष्ठताका वर्णन ...	५४४५	२२-	युधिष्ठिरके विविध धर्मयुक्त प्रश्नोंका उत्तर तथा श्राद्ध और दानके उत्तम पात्रोंका लक्षण ...	५५४४
७-	कर्मोंके फलका वर्णन ...	५४४८	२३-	देवता और पितरोंके कार्यमें निमग्न रहने योग्य पात्रों तथा नरकगामी और स्वर्गगामी मनुष्योंके लक्षणोंका वर्णन ...	५५५१
८-	श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकी महिमा ...	५४५१	२४-	ब्रह्महत्याके समान पापोंका निरूपण ...	५५५८
९-	ब्राह्मणको देनेकी प्रतिष्ठा करके न देने तथा उसके धनका अपहरण करनेसे दोषकी प्राप्तिके विषयमें सियार और वानरके संवादका उल्लेख एवं ब्राह्मणोंको दान देनेकी महिमा ...	५४५३	२५-	विभिन्न तीर्थोंके माहात्म्यका वर्णन ...	५५५९
१०-	अनधिकारीको उपदेश देनेसे हानिके विषयमें एक शूद्र और तपस्वी ब्राह्मणकी कथा ...	५४५५	२६-	श्रीगङ्गाजीके माहात्म्यका वर्णन ...	५५६३
११-	लक्ष्मीके निवास करने और न करने योग्य पुरुष, स्त्री और स्थानोंका वर्णन ...	५४५९	२७-	ब्राह्मणत्वके लिये तपस्या करनेवाले मतङ्गकी इन्द्रसे बातचीत ...	५५७१
१२-	कृतव्रतकी गति और प्रायश्चित्तका वर्णन तथा स्त्री-पुरुषके संयोगमें स्त्रीको ही अधिक सुख होनेके सम्बन्धमें भृङ्गास्वनका उपाख्यान ...	५४६२	२८-	ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेका आग्रह छोड़कर दूसरा घर माँगनेके लिये इन्द्रका मतङ्गको समझाना	५५७३
१३-	शरीर, वाणी और मनसे होनेवाले पापोंके परित्यागका उपदेश ...	५४६७	२९-	मतङ्गकी तपस्या और इन्द्रका उसे वरदान देना	५५७५
१४-	भीष्मजीकी आज्ञासे भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे महादेवजीके माहात्म्यकी कथाओं उपमन्युद्वारा महादेवजीकी स्तुति-प्रार्थना, उनके दर्शन और वरदान पानेका तथा अपने-को दर्शन प्राप्त होनेका कथन ...	५४८०	३०-	वीतहव्यके पुत्रोंसे काशी-नरेशोंका घोर युद्ध, प्रतर्दनद्वारा उनका वध और राजा वीतहव्यको भृगुके कथनसे ब्राह्मणत्व प्राप्त होनेकी कथा ...	५५७७
१५-	शिव और पार्वतीका श्रीकृष्णको वरदान और उपमन्युके द्वारा महादेवजीकी महिमा ...	५५०७	३१-	नारदजीके द्वारा पूजनीय पुरुषोंके लक्षण तथा उनके आदर-सत्कार और पूजनसे प्राप्त होनेवाले लाभका वर्णन ...	५५८१
१६-	उपमन्यु-श्रीकृष्ण-संवाद—महात्मा तण्डिद्वारा की गयी महादेवजीकी स्तुति, प्रार्थना और उसका फल ...	५५०८	३२-	राजर्षि वृषदर्भ (या उशीनर) के द्वारा शरणागत कपोतकी रक्षा तथा उस पुण्यके प्रभावसे अक्षयलोककी प्राप्ति ...	५५८४
			३३-	ब्राह्मणके महत्त्वका वर्णन ...	५५८७
			३४-	श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकी प्रशंसा ...	५५८९

- ३५-ब्रह्माजीके द्वारा ब्राह्मणोंकी महत्ताका वर्णन ... ५५९१
- ३६-ब्राह्मणकी प्रशंसाके विषयमें इन्द्र और शम्भरा-
मुरका संवाद ... ५५९३
- ३७-दान-पात्रकी परीक्षा ... ५५९५
- ३८-पञ्चचूड़ा अम्बराका नारदजीसे स्त्रियोंके दोषों-
का वर्णन करना ... ५५९७
- ३९-स्त्रियोंकी रक्षाके विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न ... ५५९९
- ४०-भृगुवंशी विपुलके द्वारा योगबलसे गुरुपत्नीके
शरीरमें प्रवेश करके उसकी रक्षा करना ... ५६०१
- ४१-विपुलका देवराज इन्द्रसे गुरुपत्नीको बचाना
और गुरुसे वरदान प्राप्त करना ... ५६०५
- ४२-विपुलका गुरुकी आज्ञासे दिव्य पुष्प लाकर
उन्हें देना और अपने द्वारा किये गये दुष्कर्म-
का स्मरण करना ... ५६०८
- ४३-देवशर्माका विपुलको निर्दोष बताकर समझाना
और भीष्मका युधिष्ठिरको स्त्रियोंकी रक्षाके लिये
आदेश देना ... ५६१०
- ४४-कन्या-विवाहके सम्बन्धमें पात्रविषयक विभिन्न
विचार ... ५६१२
- ४५-कन्याके विवाहका तथा कन्या और दौहित्र
आदिके उत्तराधिकारका विचार ... ५६१७
- ४६-स्त्रियोंके वस्त्राभूषणोंसे सत्कार करनेकी आवश्य-
कताका प्रतिपादन ... ५६१९
- ४७-ब्राह्मण आदि वर्णोंकी दायभाग-विधिका वर्णन ५६२०
- ४८-वर्णसंकर संतानोंकी उत्पत्तिका विस्तारसे वर्णन ५६२५
- ४९-नाना प्रकारके पुत्रोंका वर्णन ... ५६२९
- ५०-गौओंकी महिमाके प्रसङ्गमें च्यवन मुनिके उपा-
ख्यानका आरम्भ, मुनिका मत्स्योंके साथ जालमें
फँसकर जलसे बाहर आना ... ५६३१
- ५१-राजा नहुषका एक गौके मोलपर च्यवन मुनिको
खरीदना, मुनिके द्वारा गौओंका माहात्म्य-कथन
तथा मत्स्यों और मछलाहोंकी सद्गति ... ५६३३
- ५२-राजा कुशिक और उनकी रानीके द्वारा महर्षि
च्यवनकी सेवा ... ५६३७
- ५३-च्यवन मुनिके द्वारा राजा-रानीके धैर्यकी परीक्षा
और उनकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें
आशीर्वाद देना ... ५६३९
- ५४-महर्षि च्यवनके प्रभावसे राजा कुशिक और
उनकी रानीको अनेक आश्चर्यमय दृश्योंका
दर्शन एवं च्यवन मुनिका प्रसन्न होकर राजाको
वर माँगनेके लिये कहना ... ५६४४
- ५५-च्यवनका कुशिकके पूछनेपर उनके घरमें अपने
निवासका कारण बताना और उन्हें वरदान देना ५६४७
- ५६-च्यवन ऋषिका भृगुवंशी और कुशिकवंशियोंके
सम्बन्धका कारण बताकर तीर्थयात्राके लिये
प्रस्थान ... ५६४९
- ५७-विविध प्रकारके तप और दानोंका फल ... ५६५१
- ५८-जलशय्य बनानेका तथा बगीचे लगानेका फल ५६५४
- ५९-भीष्मद्वारा उत्तम दान तथा उत्तम ब्राह्मणोंकी
प्रशंसा करते हुए उनके सत्कारका उपदेश ५६५६
- ६०-श्रेष्ठ, अयाचक, धर्मात्मा, निर्धन एवं गुणवान्-
को दान देनेका विशेष फल ... ५६५९
- ६१-राजाके लिये यज्ञ, दान और ब्राह्मण आदि
प्रजाकी रक्षाका उपदेश ... ५६६१
- ६२-सब दानोंसे बढ़कर भूमिदानका महत्त्व तथा
उसीके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका संवाद ५६६३
- ६३-अन्नदानका विशेष माहात्म्य ... ५६७०
- ६४-विभिन्न नक्षत्रोंके योगमें भिन्न-भिन्न वस्तुओंके
दानका माहात्म्य ... ५६७३
- ६५-सुवर्ण और जल आदि विभिन्न वस्तुओंके
दानकी महिमा ... ५६७६
- ६६-जूता, शकट, तिल, भूमि, गौ और अन्नके
दानका माहात्म्य ... ५६७७
- ६७-अन्न और जलके दानकी महिमा ... ५६८१
- ६८-तिल, जल, दीप तथा रत्न आदिके दानका
माहात्म्य—धर्मराज और ब्राह्मणका संवाद ... ५६८२
- ६९-गोदानकी महिमा तथा गौओं और ब्राह्मणोंकी
रक्षासे पुण्यकी प्राप्ति ... ५६८५
- ७०-ब्राह्मणके धनका अपहरण करनेसे होनेवाली
हानिके विषयमें दृष्टान्तके रूपमें राजा नृगका
उपाख्यान ... ५६८७
- ७१-पिताके शापसे नाचिकेतका यमराजके पास जाना
और यमराजका नाचिकेतको गोदानकी महिमा
बताना ... ५६८९
- ७२-गौओंके लोक और गोदानविषयक युधिष्ठिर
और इन्द्रके प्रश्न ... ५६९५
- ७३-ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गोदानकी
महिमा बताना ... ५६९५
- ७४-दूसरोंकी गायको चुराकर देने या बेचनेसे दोष,
गोहत्याके भयंकर परिणाम तथा गोदान एवं
सुवर्ण-दक्षिणाका माहात्म्य ... ५७००
- ७५-व्रत, नियम, दम, सत्य, ब्रह्मचर्य, माता-पिता,
गुरु आदिकी सेवाकी महत्ता ... ५७०१
- ७६-गोदानकी विधि, गौओंसे प्रार्थना, गौओंके
निष्कय और गोदान करनेवाले नरेशोंके नाम ५७०४

- ७७-कपिला गौओंकी उत्पत्ति और महिमाका वर्णन ५७०७
- ७८-वसिष्ठका सौदासको गोदानकी विधि एवं महिमा बताना ... ५७१०
- ७९-गौओंको तपस्याद्वारा अभीष्ट वरकी प्राप्ति तथा उनके दानकी महिमा, विभिन्न प्रकारके गौओंके दानसे विभिन्न उत्तम लोकोंमें गमनका कथन ५७१२
- ८०-गौओं तथा गोदानकी महिमा ... ५७१४
- ८१-गौओंका माहात्म्य तथा व्यासजीके द्वारा शुकदेवसे गौओंकी, गोलोककी और गोदानकी महत्ताका वर्णन ... ५७१५
- ८२-लक्ष्मी और गौओंका संवाद तथा लक्ष्मीकी प्रार्थनापर गौओंके द्वारा गोबर और गोमूत्रमें लक्ष्मीको निवासके लिये स्थान दिया जाना ... ५७१८
- ८३-ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गौओंका उत्कर्ष बताना और गौओंको वरदान देना ... ५७२०
- ८४-भीष्मजीका अपने पिता शान्तनुके हाथमें पिण्ड न देकर कुशपर देना, सुवर्णकी उत्पत्ति और उसके दानकी महिमाके सम्बन्धमें वसिष्ठ और परशुरामका संवाद, पार्वतीका देवताओंको शपथ, तारकासुरसे डरे हुए देवताओंका ब्रह्माजीकी शरणमें जाना ... ५७२४
- ८५-ब्रह्माजीका देवताओंको आश्वासन, अग्निकी खोज, अग्नि के द्वारा स्थापित किये हुए शिवके तेजसे संतप्त हो गङ्गाका उसे मेरुपर्वतपर छोड़ना, कार्तिकेय और सुवर्णकी उत्पत्ति, वरुणरूपधारी महादेवजीके यज्ञमें अग्निसे ही प्रजापतियों और सुवर्णका प्रादुर्भाव, कार्तिकेयद्वारा तारकासुरका वध ५७२९
- ८६-कार्तिकेयकी उत्पत्ति, पालन-पोषण और उनका देवसेनापति-पदपर अभिषेक, उनके द्वारा तारकासुरका वध ... ५७४०
- ८७-विविध तिथियोंमें श्राद्ध करनेका फल ... ५७४२
- ८८-श्राद्धमें पितरोंके वृत्तिविषयका वर्णन ... ५७४४
- ८९-विभिन्न नक्षत्रोंमें श्राद्ध करनेका फल ... ५७४४
- ९०-श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी परीक्षा, पंक्तिदूषक और पंक्तिपावन ब्राह्मणोंका वर्णन, श्राद्धमें लाख मूर्ख ब्राह्मणोंको भोजन करानेकी अपेक्षा एक वेदवेत्ताको भोजन करानेकी श्रेष्ठताका कथन ... ५७४६
- ९१-शोकातुर निमिका पुत्रके निमित्त पिण्डदान तथा श्राद्धके विषयमें निमिको महर्षि अत्रिका उपदेश, विश्वेदेवोंके नाम एवं श्राद्धमें त्याज्य वस्तुओंका वर्णन ... ५७५०
- ९२-पितर और देवताओंका श्राद्धान्नसे अजीर्ण होकर ब्रह्माजीके पास जाना और अग्नि के द्वारा अजीर्णका निवारण, श्राद्धसे तुम हुए पितरोंका आशीर्वाद ... ५७५३
- ९३-गृहस्थके धर्मोंका रहस्य, प्रतिग्रहके दोष बतानेके लिये ऋषादभि और सप्तर्षियोंकी कथा, मिथुरूपधारी इन्द्रके द्वारा कृत्याका वध करके सप्तर्षियोंकी रक्षा तथा कमलोंकी चोरीके विषयमें शपथ खानेके बहानेसे धर्मपालनका संकेत ... ५७५४
- ९४-ब्रह्मसर तीर्थमें अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर ब्रह्मर्षियों और राजर्षियोंकी धर्मोपदेशपूर्ण शपथ तथा धर्मज्ञानके उद्देश्यसे चुराये हुए कमलोंका वापस देना ... ५७५६
- ९५-छत्र और उपानहकी उत्पत्ति एवं दानविषयक युधिष्ठिरका प्रश्न तथा सूर्यकी प्रचण्ड धूपसे रेणुकाका मस्तक और पैरोंके संतप्त होनेपर जमदग्नि का सूर्यपर कुपित होना और विप्ररूपधारी सूर्यसे वार्तालाप ... ५७७१
- ९६-छत्र और उपानहकी उत्पत्ति एवं दानकी प्रशंसा ५७७३
- ९७-गृहस्थधर्म, पञ्चयज्ञ-कर्मके विषयमें पृथ्वीदेवी और भगवान् श्रीकृष्णका संवाद ... ५७८६
- ९८-तपस्वी सुवर्ण और मनुका संवाद—धूप, धूप, दीप और उपहारके दानका माहात्म्य ५७८८
- ९९-नहुषका ऋषियोंपर अत्याचार तथा उसके प्रतीकारके लिये महर्षि भृगु और अगस्त्यकी बातचीत ... ५७९२
- १००-नहुषका पतन, शतक्रतुका इन्द्रपदपर पुनः अभिषेक तथा दीपदानकी महिमा ... ५७९५
- १०१-ब्राह्मणोंके धनका अपहरण करनेसे प्राप्त होनेवाले दोषके विषयमें क्षत्रिय और चाण्डालका संवाद तथा ब्रह्मस्वकी रक्षामें प्राणोत्सर्ग करनेसे चाण्डालको मोक्षकी प्राप्ति ... ५७९७
- १०२-भिन्न-भिन्न कर्मोंके अनुसार भिन्न-भिन्न लोकोंकी प्राप्ति बतानेके लिये धृतराष्ट्ररूपधारी इन्द्र और गौतम ब्राह्मणके संवादका उल्लेख ... ५८००
- १०३-ब्रह्माजी और भगीरथका संवाद, यज्ञ, तप, दान आदिसे भी अनशन व्रतकी विशेष महिमा ५८०६
- १०४-आयुकी वृद्धि और क्षय करनेवाले शुभाशुभ कर्मोंके वर्णनसे गृहस्थाश्रमके कर्तव्योंका विस्तारपूर्वक निरूपण ... ५८१०
- १०५-बड़े और छोटे भाईके पारस्परिक बर्ताव तथा माता-पिता, आचार्य आदि गुरुजनोंके गौरवका वर्णन ... ५८२३

- १०६-मास, पक्ष एवं तिथिसम्बन्धी विभिन्न व्रतो-
पवासके फलका वर्णन ... ५८२५
- १०७-दरिद्रोंके लिये यज्ञतुल्य फल देनेवाले उपवास-
व्रत और उसके फलका विस्तारपूर्वक वर्णन ५८२९
- १०८-मानस तथा पार्थिव तीर्थकी महत्ता ... ५८३८
- १०९-प्रत्येक मासकी द्वादशी तिथिको उपवास
और भगवान् विष्णुकी पूजा करनेका
विशेष माहात्म्य ... ५८३९
- ११०-रूप-सौन्दर्य और लोकप्रियताकी प्राप्तिके
लिये मार्गशीर्षमासमें चन्द्र-व्रत करनेका
प्रतिपादन ... ५८४१
- १११-बृहस्पतिका युधिष्ठिरसे प्राणियोंके जन्मके
प्रकारका और नानाविध पापोंके फलस्वरूप
नरकादिकी प्राप्ति एवं तिर्यग्योनियोंमें जन्म
लेनेका वर्णन ... ५८४१
- ११२-पापसे छूटनेके उपाय तथा अन्न-दानकी
विशेष महिमा ... ५८५०
- ११३-बृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको अहिंसा एवं धर्मकी
महिमा बताकर स्वर्गलोकको प्रस्थान ... ५८५२
- ११४-हिंसा और मांसभक्षणकी घोर निन्दा ... ५८५३
- ११५-मद्य और मांसके भक्षणमें महान् दोष,
उनके त्यागकी महिमा एवं त्यागमें परम
लाभका प्रतिपादन ... ५८५५
- ११६-मांस न खानेसे लाभ और अहिंसाधर्मकी
प्रशंसा ... ५८६०
- ११७-शुभ कर्मसे एक कीड़ेको पूर्व-जन्मकी स्मृति होना
और कीट-योनियों में भी मृत्युका भय एवं
सुखकी अनुभूति बताकर कीड़ेका अपने
कल्याणका उपाय पूछना ... ५८६२
- ११८-कीड़ेका क्रमशः क्षत्रिययोनियोंमें जन्म लेकर
व्यासजीका दर्शन करना और व्यासजीका
उसे ब्राह्मण होने तथा स्वर्गसुख और अक्षय
सुखकी प्राप्ति होनेका वरदान देना ... ५८६४
- ११९-कीड़ेका ब्राह्मणयोनियोंमें जन्म लेकर, ब्रह्मलोकमें
जाकर सनातन ब्रह्मको प्राप्त करना ... ५८६६
- १२०-व्यास और मैत्रेयका संवाद—दानकी प्रशंसा
और कर्मका रहस्य ... ५८६७
- १२१-व्यास-मैत्रेय-संवाद—विद्वान् एवं सदाचारी
ब्राह्मणको अन्नदानकी प्रशंसा ... ५८६९
- १२२-व्यास-मैत्रेय-संवाद—तपकी प्रशंसा तथा
गृहस्थके उत्तम कर्तव्यका निर्देश ... ५८७१
- १२३-शाण्डिली और सुमनाका संवाद—पतिव्रता
स्त्रियोंके कर्तव्यका वर्णन ... ५८७३
- १२४-नारदका पुण्डरीकको भगवान् नारायणकी
आराधनाका उपदेश तथा उन्हें भगवद्भक्तकी
प्राप्ति, सामगुणकी प्रशंसा, ब्राह्मणका राक्षसके
सफेद और दुर्बल होनेका कारण बताना ... ५८७४
- १२५-श्राद्धके विषयमें देवदूत और पितरोंका,
पापोंसे छूटनेके विषयमें महर्षि विद्युत्प्रभ और
इन्द्रका, धर्मके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका
तथा ऋषोत्सर्ग आदिके विषयमें देवताओं,
ऋषियों और पितरोंका संवाद ... ५८८०
- १२६-विष्णु, बलदेव, देवगण, धर्म, अग्नि,
विश्वामित्र, गोसमुदाय और ब्रह्माजीके द्वारा
धर्मके गूढ़ रहस्यका वर्णन ... ५८८६
- १२७-अग्नि, लक्ष्मी, अङ्गिरा, गार्ग्य, धौम्य तथा
जमदग्नि के द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन ... ५८८९
- १२८-वायुके द्वारा धर्माधर्मके रहस्यका वर्णन ... ५८९१
- १२९-लोमशद्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन ... ५८९१
- १३०-अरुन्धती, धर्मराज और चित्रशुतद्वारा
धर्मसम्बन्धी रहस्यका वर्णन ... ५८९३
- १३१-प्रमथगणोंके द्वारा धर्माधर्मसम्बन्धी रहस्यका
कथन ... ५८९५
- १३२-दिग्गजोंका धर्मसम्बन्धी रहस्य एवं प्रभाव ... ५८९६
- १३३-महादेवजीका धर्मसम्बन्धी रहस्य ... ५८९७
- १३४-स्कन्ददेवका धर्मसम्बन्धी रहस्य तथा
भगवान् विष्णु और भीष्मजीके द्वारा
माहात्म्यका वर्णन ... ५८९८
- १३५-जिनका अन्न ग्रहण करनेयोग्य है और
जिनका ग्रहण करने योग्य नहीं है, उन
मनुष्योंका वर्णन ... ५९००
- १३६-दान लेने और अनुचित भोजन करनेका
प्रायश्चित्त ... ५९०१
- १३७-दानसे स्वर्गलोकमें जानेवाले राजाओंका वर्णन ... ५९०३
- १३८-पाँच प्रकारके दानोंका वर्णन ... ५९०५
- १३९-तपस्वी श्रीकृष्णके पास ऋषियोंका आना, उनका
प्रभाव देखना और उनसे वार्तालाप करना ... ५९०६
- १४०-नारदजीके द्वारा हिमालय पर्वतपर भूतगणोंके
सहित शिवजीकी शोभाका विस्तृत वर्णन,
पार्वतीका आगमन, शिवजीकी दोनों आँखोंको
अपने हाथोंसे बंद करना और तीसरे नेत्रका
प्रकट होना, हिमालयका भस्म होना और
पुनः प्राकृत अवस्थामें हो जाना तथा शिव-
पार्वतीके धर्मविषयक संवादकी उत्थापना ... ५९१०
- १४१-शिव-पार्वतीका धर्मविषयक संवाद—वर्णाश्रम-
धर्मसम्बन्धी आचार एवं प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप
धर्मका निरूपण ... ५९१४

- १४२-उमा-महेश्वर-संवाद, वानप्रस्थ धर्म तथा उसके पालनकी विधि और महिमा ... ५९२८
- १४३-ब्राह्मणादि वर्णोंकी प्राप्तिमें मनुष्यके शुभाशुभ कर्मोंकी प्रधानताका प्रतिपादन ... ५९३५
- १४४-बन्धन-मुक्ति, स्वर्ग, नरक एवं दीर्घायु और अल्पायु प्रदान करनेवाले शरीर, वाणी और मनद्वारा किये जानेवाले शुभाशुभ कर्मोंका वर्णन ... ५९३९
- १४५-स्वर्ग और नरक तथा उत्तम और अधम कुलमें जन्मकी प्राप्ति करानेवाले कर्मोंका वर्णन ... ५९४३
१. राजधर्मका वर्णन ... ५९४७
२. योद्धाओंके धर्मका वर्णन तथा रणयज्ञमें प्राणोत्सर्गकी महिमा ... ५९५१
३. संक्षेपसे राजधर्मका वर्णन ... ५९५३
४. अहिंसाकी और इन्द्रियसंयमकी प्रशंसा तथा दैवकी प्रधानता ... ५९५५
५. त्रिवर्गका निरूपण तथा कल्याणकारी आचार-व्यवहारका वर्णन ... ५९५५
६. विविध प्रकारके कर्मफलोंका वर्णन ... ५९५९
७. अन्धत्व और पङ्क्तुत्व आदि नाना प्रकारके दोषों और रोगोंके कारणभूत दुष्कर्मोंका वर्णन ... ५९६४
८. उमा-महेश्वर-संवादमें कितने ही महत्त्वपूर्ण विषयोंका विवेचन ... ५९६९
९. प्राणियोंके चार भेदोंका निरूपण, पूर्व-जन्मकी स्मृतिका रहस्य, मरकर फिर लौटनेमें कारण स्वप्नदर्शन, दैव और पुरुषार्थ तथा पुनर्जन्मका विवेचन ... ५९७६
१०. यमलोक तथा वहाँके भागोंका वर्णन, पापियोंकी नरकयातनाओं तथा कर्मानुसार विभिन्न योनियोंमें उनके जन्मका उल्लेख ... ५९८०
११. शुभाशुभ मानस आदि तीन प्रकारके कर्मोंका स्वरूप और उनके फलका एवं मद्यसेवनके दोषोंका वर्णन, आहार-शुद्धि, मांस-भक्षणसे दोष, मांस न खानेसे लाभ, जीवदयाके महत्त्व, गुरुपूजाकी विधि, उपवास-विधि, ब्रह्मचर्य-पालन, तीर्थचर्चा, सर्वसाधारण द्रव्यके दानसे पुण्य, अन्न, सुवर्ण, गौ, भूमि, कन्या और विद्यादानका माहात्म्य, पुण्य-तम देश, काल, दिये हुए दान और धर्मकी निष्फलता, विविध प्रकारके दान, लौकिक-वैदिक यज्ञ तथा देवताओंकी पूजाका निरूपण ... ५९८६

१२. श्राद्ध-विधान आदिका वर्णन, दानकी त्रिविधतासे उसके फलकी भी त्रिविधताका उल्लेख, दानके पाँच फल, नाना प्रकारके धर्म और उनके फलोंका प्रतिपादन ... ६००१
१३. प्राणियोंकी शुभ और अशुभ गतिका निश्चय करानेवाले लक्षणोंका वर्णन, मृत्युके दो भेद और यत्नसाध्य मृत्युके चार भेदोंका कथन, कर्तव्यपालनपूर्वक शरीर-त्यागका महान् फल और काम-क्रोध आदिद्वारा देह-त्याग करनेसे नरककी प्राप्ति ... ६००५
१४. मोक्षधर्मकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन, मोक्ष-साधक ज्ञानकी प्राप्तिका उपाय और मोक्षकी प्राप्तिमें वैराग्यकी प्रधानता ... ६००८
१५. सांख्यज्ञानका प्रतिपादन करते हुए अव्यक्तादि चौबीस तत्त्वोंकी उत्पत्ति आदिका वर्णन ... ६०१३
१६. योगधर्मका प्रतिपादनपूर्वक उसके फलका वर्णन ... ६०१६
१७. पाशुपत योगका वर्णन तथा शिवलिङ्ग-पूजनका माहात्म्य ... ६०१९
- १४६-पार्वतीजीके द्वारा स्त्री-धर्मका वर्णन ... ६०२१
- १४७-वंशपरम्पराका कथन और भगवान् श्रीकृष्णके माहात्म्यका वर्णन ... ६०२५
- १४८-भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन और भीष्मजीका युधिष्ठिरको राज्य करनेके लिये आदेश देना ... ६०२८
- १४९-श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ... ६०३३
- १५०-जपने योग्य मन्त्र और सवेरे-शाम कीर्तन करनेयोग्य देवता, ऋषियों और राजाओंके मङ्गलमय नामोंका कीर्तन-माहात्म्य तथा गायत्री-जपका फल ... ६०५०
- १५१-ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन ... ६०५५
- १५२-कार्तवीर्य अर्जुनको दत्तात्रेयजीसे चार वरदान प्राप्त होनेका एवं उनमें अभिमानकी उत्पत्तिका वर्णन तथा ब्राह्मणोंकी महिमाके विषयमें कार्तवीर्य अर्जुन और वायुदेवताके संवादका उल्लेख ... ६०५७
- १५३-वायुद्वारा उदाहरणसहित ब्राह्मणोंकी महत्ताका वर्णन ... ६०५९
- १५४-ब्राह्मणशिरोमणि उतपत्यके प्रभावका वर्णन ... ६०६०
- १५५-ब्रह्मर्षि अगस्त्य और वसिष्ठके प्रभावका वर्णन ... ६०६२
- १५६-अत्रि और ज्यवन ऋषिके प्रभावका वर्णन ... ६०६४

- १५७-कपनामक दानवोंके द्वारा स्वर्गलोकपर अधिकार जमा लेनेपर ब्राह्मणोंका कर्षोंको भस्म कर देना, वायुदेव और कार्तवीर्य अर्जुनके संवादका उपसंहार ... ६०६६
- १५८-भीष्मजीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन ... ६०६८
- १५९-श्रीकृष्णका प्रद्युम्नको ब्राह्मणोंकी महिमा बताते हुए दुर्वासाके चरित्रका वर्णन करना और वह सारा प्रसङ्ग युधिष्ठिरको सुनाना ... ६०७३
- १६०-श्रीकृष्णद्वारा भगवान् शङ्करके माहात्म्यका वर्णन ... ६०७७
- १६१-भगवान् शङ्करके माहात्म्यका वर्णन ... ६०८०
- १६२-धर्मके विषयमें आगम-ग्रन्थोंकी श्रेष्ठता, धर्म-धर्मके फल, साधु-असाधुके लक्षण तथा शिक्षाचारका निरूपण ... ६०८१
- १६३-युधिष्ठिरका विद्या, बल और बुद्धिकी अपेक्षा भाग्यकी प्रधानता बताना और भीष्मजीद्वारा उसका उत्तर ... ६०८६
- १६४-भीष्मका शुभाशुभ कर्मोंको ही सुख-दुःखकी प्राप्तिमें कारण बताते हुए धर्मके अनुष्ठानपर जोर देना ... ६०८७
- १६५-नित्य स्मरणीय देवता, नदी, पर्वत, ऋषि और राजाओंके नाम-कीर्तनका माहात्म्य ... ६०८८
- १६६-भीष्मकी अनुमति पाकर युधिष्ठिरका सपरिवार हस्तिनापुरको प्रस्थान ... ६०९१
- (भीष्मस्वर्गारोहणपर्व)
- १६७-भीष्मके अन्त्येष्टि-संस्कारकी सामग्री लेकर युधिष्ठिर आदिका उनके पास जाना और भीष्मका श्रीकृष्ण आदिसे देह-त्यागकी अनुमति लेते हुए धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरको कर्तव्यका उपदेश देना ... ६०९३
- १६८-भीष्मजीका प्राणत्याग, धृतराष्ट्र आदिके द्वारा उनका दाह-संस्कार, कौरवोंका गङ्गाके जलसे भीष्मको जलाञ्जलि देना, गङ्गाजीका प्रकट होकर पुत्रके लिये शोक करना और श्रीकृष्णका उन्हें समझाना ... ६०९६

चित्र-सूची

(तिरंगा)

- १-देवाधिदेव भगवान् शङ्कर ... ५४२५
- २-दण्ड-मेखलाधारी भगवान् श्रीकृष्णको शिव-पार्वतीके दर्शन ... ५५०४
- ३-ब्रह्माजीका गौओंको वरदान ... ५६२५
- ४-राजा नृगका गिरगिटकी योनिसे उद्धार ... ५६८७
- ५-शिव-पार्वती ... ५८२५
- ६-पार्वतीजी भगवान् शंकरको शरीरधारिणी समस्त नदियोंका परिचय दे रही हैं ... ६०२२
- ७-पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु ... ६०३३

(सादा)

- ८-वृद्धा गौतमीकी आदर्श क्षमा ... ५४३१
- ९-धर्मात्मा शुक और इन्द्रकी बात-चीत ... ५४४४
- १०-महर्षि वशिष्ठका ब्रह्माजीके साथ प्रश्नोत्तर ... ५४४५
- ११-भगवान् श्रीकृष्ण एवं विभिन्न महर्षियोंका युधिष्ठिरको उपदेश ... ५५२९
- १२-भयभीत कबूतर महाराज शिविकी गोदमें ... ५५८४
- १३-पृथ्वी और श्रीकृष्णका संवाद ... ५५९१
- १४-जालके साथ नदीमेंसे निकाले गये महर्षि ज्यवन ५६३३

- १५-महर्षि ज्यवनका मूल्याङ्कन ... ५६३५
- १६-इन्द्रका ब्रह्माजीके साथ गौओंके सम्बन्धमें प्रश्नोत्तर ... ५६९५
- १७-महर्षि वशिष्ठका राजा सौदासे गौओंका माहात्म्य-कथन ... ५७१०
- १८-भगवती लक्ष्मीकी गौओंसे आश्रयके लिये प्रार्थना ५७१९
- १९-गृहस्थ-धर्मके सम्बन्धमें श्रीकृष्णका पृथ्वीके साथ संवाद ... ५७८६
- २०-बृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको उपदेश ... ५८४२
- २१-देवलोकमें पतिव्रता शाण्डिली और सुमनाकी बात-चीत ... ५८७३
- २२-सामनीतिकी विजय ... ५८७७
- २३-इन्द्रका भगवान् विष्णुके साथ प्रश्नोत्तर ... ५८८६
- २४-भगवान् श्रीकृष्णकी तपस्या ... ५९०७
- २५-भगवान् शंकर श्रीकृष्णका माहात्म्य कह रहे हैं ... ६०२५
- २६-भगवान् दत्तात्रेयकी कार्तवीर्यपर कृपा ... ६०५७
- २७-शरशय्यापर पड़े भीष्मकी युधिष्ठिरसे बात-चीत ६०९३
- २८-श्रीकृष्ण और व्यासजीके द्वारा पुत्र-शोकाकुल गङ्गाजीको सान्त्वना ... ६०९८
- २९-(१७ लाइन चित्र फरमोंमें)

आश्वमेधिकपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(अश्वमेधपर्व)				
१-युधिष्ठिरका शोकमग्न होकर गिरना और धृतराष्ट्रका उन्हें समझाना	६०९९	१५-भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनसे द्वारका जानेका प्रस्ताव करना	६१३१
२-श्रीकृष्ण और व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना	६१००		(अनुगीतापर्व)		
३-व्यासजीका युधिष्ठिरको अश्वमेध यज्ञके लिये धनकी प्राप्तिका उपाय बताते हुए संवर्त और मरुत्तका प्रसङ्ग उपस्थित करना	६१०२	१६-अर्जुनका श्रीकृष्णसे गीताका विषय पूछना और श्रीकृष्णका अर्जुनसे सिद्ध, महर्षि एवं काश्यपका संवाद सुनाना	६१३३
४-मरुत्तके पूर्वजोंका परिचय देते हुए व्यासजीके द्वारा उनके गुण, प्रभाव एवं यज्ञका दिग्दर्शन	६१०३		१७-काश्यपके प्रश्नोंके उत्तरमें सिद्ध महात्माद्वारा जीवकी विविध गतियोंका वर्णन	६१३६
५-इन्द्रकी प्रेरणासे बृहस्पतिजीका मनुष्यको यज्ञ न करानेकी प्रतिज्ञा करना	६१०५	१८-जीवके गर्भ-प्रवेश, आचार-धर्म, कर्म-फलकी अनिवार्यता तथा संसारसे तरनेके उपायका वर्णन	६१३९
६-नारदजीकी आज्ञासे मरुत्तका उनकी बतायी हुई युक्तिके अनुसार संवर्तसे मेट कराना	६१०७	१९-गुरु-शिष्यके संवादमें मोक्ष-प्राप्तिके उपायका वर्णन	६१४२
७-संवर्त और मरुत्तकी बातचीत, मरुत्तके विशेष आग्रहपर संवर्तका यज्ञ करानेकी स्वीकृति देना	६११०		२०-ब्राह्मणगीता—एक ब्राह्मणका अपनी पत्नीसे ज्ञानयज्ञका उपदेश करना	६१४६
८-संवर्तका मरुत्तको सुवर्णकी प्राप्ति के लिये महादेवजीकी नाममयी स्तुति का उपदेश और धनकी प्राप्ति तथा मरुत्तकी सम्पत्तिसे बृहस्पति का चिन्तित होना	६११२	२१-दस होताओंसे सम्पन्न होनेवाले यज्ञका वर्णन तथा मन और वाणीकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन	६१४८	
९-बृहस्पति का इन्द्रसे अपनी चिन्ताका कारण बताना, इन्द्रकी आज्ञासे अग्निदेवका मरुत्तके पास उनका संदेश लेकर जाना और संवर्तके भयसे पुनः लौटकर इन्द्रसे ब्रह्मबलकी श्रेष्ठता बताना	६११५	२२-मन-बुद्धि और इन्द्रियरूप सप्त होताओंका, यज्ञ तथा मन-इन्द्रिय-संवादका वर्णन	६१५०
१०-इन्द्रका गन्धर्वराजको भेजकर मरुत्तको भय दिखाना और संवर्तका मन्त्र-बलसे इन्द्रसहित सप्त देवताओंको बुलाकर मरुत्तका यज्ञ पूर्ण करना	६११९	२३-प्राण, अपान आदिका संवाद और ब्रह्माजीका सबकी श्रेष्ठता बतलाना	६१५३
११-श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको इन्द्रद्वारा शरीरस्थ वृत्रासुरका संहार करनेका इतिहास सुनाकर समझाना	६१२३	२४-देवर्षि नारद और देवमतका संवाद एवं उदानके उत्कृष्ट रूपका वर्णन	६१५५
१२-भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको मनपर विजय करनेके लिये आदेश	६१२५	२५-चातुर्होम यज्ञका वर्णन	६१५६
१३-श्रीकृष्णद्वारा ममताके त्यागका महत्व, काम-गीताका उल्लेख और युधिष्ठिरको यज्ञके लिये प्रेरणा करना	६१२६	२६-अन्तर्यामीकी प्रधानता	६१५७
१४-ऋषियोंका अन्तर्धान होना, भीष्म आदिका श्राद्ध करके युधिष्ठिर आदिका हस्तिनापुरमें जाना तथा युधिष्ठिरके धर्म-राज्यका वर्णन	६१२८	२७-अध्यात्मविषयक महान् वनका वर्णन	६१५९
			२८-ज्ञानी पुरुषकी स्थिति तथा अर्घ्य और यतिका संवाद	६१६१
			२९-परशुरामजीके द्वारा क्षत्रिय-कुलका संहार	६१६३
			३०-अलर्कके ध्यान-योगका उदाहरण देकर पितामहोंका परशुरामजीको समझाना और परशुरामजीका तपस्याके द्वारा सिद्धि प्राप्त करना	६१६५
			३१-राजा अम्बरीषकी गायी हुई आध्यात्मिक स्वराज्यविषयक गाथा	६१६८
			३२-ब्राह्मण-रूपधारी धर्म और जनकका ममत्वत्याग-विषयक संवाद	६१६९
			३३-ब्राह्मणका पत्नीके प्रति अपने ज्ञाननिष्ठ स्वरूप-का परिचय देना	६१७१

- ३४-भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा ब्राह्मण, ब्राह्मणी और क्षेत्रज्ञका रहस्य बतलाते हुए ब्राह्मण-गीताका उपसंहार ... ६१७२
- ३५-श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनसे मोक्ष-धर्मका वर्णन—गुरु और शिष्यके संवादमें ब्रह्मा और महर्षियोंके प्रश्नोत्तर ... ६१७३
- ३६-ब्रह्माजीके द्वारा तमोगुणका उसके कार्यका और फलका वर्णन ... ६१७६
- ३७-रजोगुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल ... ६१७९
- ३८-सत्त्वगुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल ... ६१८०
- ३९-सत्त्व आदि गुणोंका और प्रकृतिके नामोंका वर्णन ... ६१८१
- ४०-महत्सत्त्वके नाम और परमात्मतत्त्वकी जाननेकी महिमा ... ६१८३
- ४१-अहंकारकी उत्पत्ति और उसके स्वरूपका वर्णन ६१८४
- ४२-अहंकारसे पञ्च महाभूतों और इन्द्रियोंकी सृष्टि, अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवतका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश ... ६१८४
- ४३-चराचर प्राणियोंके अधिपतियोंका, धर्म आदिके लक्षणोंका और विषयोंकी अनुभूतिके साधनोंका वर्णन तथा क्षेत्रज्ञकी विलक्षणता ... ६१८८
- ४४-सब पदार्थोंके आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन ... ६१९१
- ४५-देहरूपी कालचक्रका तथा रहस्य और ब्राह्मणके धर्मका कथन ... ६१९३
- ४६-ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासीके धर्मका वर्णन ६१९४
- ४७-मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान-खड्गसे उसे काटनेका वर्णन ... ६१९८
- ४८-आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन ६२००
- ४९-धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न ६२०१
- ५०-सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता; बुद्धिमात्सकी प्रशंसा, पञ्चभूतोंके गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन ... ६२०२
- ५१-तपस्याका प्रभाव; आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार ६२०६
- ५२-श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सभसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना ... ६२०९
- ५३-मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात सुनकर उत्तङ्कमुनिका कुपित होना और श्रीकृष्णका उन्हें शान्त करना ... ६२१३
- ५४-भगवान् श्रीकृष्णका उत्तङ्कसे अध्यात्मतत्त्वका वर्णन करना तथा दुर्योधनके अपराधको कौरवोंके विनाशका कारण बतलाना ... ६२१५
- ५५-श्रीकृष्णका उत्तङ्क मुनिको विश्वरूपका दर्शन कराना और मरुदेशमें जल प्राप्त होनेका वरदान देना ... ६२१७
- ५६-उत्तङ्ककी गुरुभक्तिका वर्णन; गुरुपुत्रीके साथ उत्तङ्कका विवाह; गुरुपत्नीकी आज्ञासे दिव्यकुण्डल लानेके लिये उत्तङ्कका राजा सौदासके पास जाना ... ६२२०
- ५७-उत्तङ्कका सौदाससे उनकी रानीके कुण्डल माँगना और सौदासके कहनेसे रानी मदयन्तीके पास जाना ... ६२२२
- ५८-कुण्डल लेकर उत्तङ्कका लौटना; मार्गमें उन कुण्डलोंका अपहरण होना तथा इन्द्र और अग्निदेवकी कृपासे फिर उन्हें पाकर गुरुपत्नीको देना ... ६२२५
- ५९-भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकामें जाकर रैवतक पर्वतपर महोत्सवमें सम्मिलित होना और सबसे मिलना ... ६२२९
- ६०-वसुदेवजीके पूलनेपर श्रीकृष्णका उन्हें महाभारत-युद्धका वृत्तान्त संक्षेपसे सुनाना ... ६२३१
- ६१-श्रीकृष्णका सुभद्राके कहनेसे वसुदेवजीको अभिमन्युवधका वृत्तान्त सुनाना ... ६२३३
- ६२-वसुदेव आदि यादवोंका अभिमन्युके निमित्त श्राद्ध करना तथा व्यासजीका उत्तरा और अर्जुनको समझाकर युधिष्ठिरको अश्वमेधयज्ञ करनेकी आज्ञा देना ... ६२३६
- ६३-युधिष्ठिरका अपने भाइयोंके साथ परामर्श करके सबको साथ ले धन ले आनेके लिये प्रस्थान करना ... ६२३७
- ६४-पाण्डवोंका हिमालयपर पहुँचकर वहाँ पड़ाव डालना और रातमें उपवासपूर्वक निवास करना ६२४०
- ६५-ब्राह्मणोंकी आज्ञासे भगवान् शिव और उनके पार्षद आदिकी पूजा करके युधिष्ठिरका उस धनराशिको खुदवाकर अपने साथ ले जाना ... ६२४१
- ६६-श्रीकृष्णका हस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना ... ६२४३
- ६७-परीक्षितको जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना ... ६२४५
- ६८-श्रीकृष्णका प्रसृतिकाग्रहमें प्रवेश; उत्तराका विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके लिये प्रार्थना ... ६२४६

- ६९-उत्तराका विलाप और भगवान् श्रीकृष्णका उसके मृत बालकको जीवन-दान देना ... ६२४८
- ७०-श्रीकृष्णद्वारा राजा परीक्षितका नामकरण तथा पाण्डवोंका हस्तिनापुरके समीप आगमन ... ६२४९
- ७१-भगवान् श्रीकृष्ण और उनके साथियोंद्वारा पाण्डवोंका स्वागत, पाण्डवोंका नगरमें आकर सबसे मिलना और व्यासजी तथा श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको यज्ञके लिये आज्ञा देना ... ६२५१
- ७२-व्यासजीकी आज्ञासे अश्वकी रक्षाके लिये अर्जुनकी, राज्य और नगरकी रक्षाके लिये भीमसेन और नकुलकी तथा कुटुम्ब-पालनके लिये सहदेवकी नियुक्ति ... ६२५२
- ७३-सेनासहित अर्जुनके द्वारा अश्वका अनुसरण ... ६२५४
- ७४-अर्जुनके द्वारा त्रिगतोंकी पराजय ... ६२५६
- ७५-अर्जुनका प्रायज्यौतिषपुरके राजा वज्रदत्तके साथ युद्ध ... ६२५८
- ७६-अर्जुनके द्वारा वज्रदत्तकी पराजय ... ६२६०
- ७७-अर्जुनका सैन्धवोंके साथ युद्ध ... ६२६२
- ७८-अर्जुनका सैन्धवोंके साथ युद्ध और दुःशलाके अनुरोधसे उसकी समाप्ति ... ६२६४
- ७९-अर्जुन और बभ्रुवाहनका युद्ध एवं अर्जुनकी मृत्यु ... ६२६७
- ८०-चित्राङ्गदाका विलाप, मूर्च्छासे जगनेपर बभ्रुवाहनका शोकद्वार और उलूपीके प्रयत्नसे संजीवनीमणिके द्वारा अर्जुनका पुनः जीवित होना ... ६२७०
- ८१-उलूपीका अर्जुनके पृच्छनेपर अपने आगमनका कारण एवं अर्जुनकी पराजयका रहस्य बताना, पुत्र और पत्नीसे विदा लेकर पार्थका पुनः अश्वके पीछे जाना ... ६२७४
- ८२-मगधराज मेघसन्धिकी पराजय ... ६२७६
- ८३-दक्षिण और पश्चिम समुद्रके तटवर्ती देशोंमें होते हुए अश्वका द्वारका, पञ्चनद एवं गान्धार देशमें प्रवेश ... ६२७८
- ८४-शकुनिपुत्रकी पराजय ... ६२८०
- ८५-यज्ञभूमिकी तैयारी, नाना देशोंसे आये हुए राजाओंका यज्ञकी सजावट और आयोजन देखना ... ६२८१
- ८६-राजा युधिष्ठिरका भीमसेनको राजाओंकी पूजा करनेका आदेश और श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना ... ६२८४

- ८७-अर्जुनके विषयमें श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरकी बातचीत, अर्जुनका हस्तिनापुरमें जाना तथा उलूपी और चित्राङ्गदाके साथ बभ्रुवाहनका आगमन ... ६२८५
- ८८-उलूपी और चित्राङ्गदाके सहित बभ्रुवाहनका रत्न-आभूषण आदिसे सत्कार तथा अश्वमेध-यज्ञका आरम्भ ... ६२८७
- ८९-युधिष्ठिरका ब्राह्मणोंको दक्षिणा देना और राजाओंको भेंट देकर विदा करना ... ६२९०
- ९०-युधिष्ठिरके यज्ञमें एक नेवलेका उच्छृङ्खलितधारी ब्राह्मणके द्वारा किये गये शेरभर सत्सूदानकी महिमा उस अश्वमेधयज्ञसे भी बढ़कर बतलाना ६२९३
- ९१-हिसामिश्रित यज्ञ और धर्मकी निन्दा ... ६३०१
- ९२-महर्षि अगस्त्यके यज्ञकी कथा ... ६३०३

(वैष्णवधर्मपर्व)

१. युधिष्ठिरका वैष्णवधर्मविषयक प्रश्न और भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा धर्मका तथा अपनी महिमाका वर्णन ... ६३०७
२. चारों वर्णोंके कर्म और उनके फलोंका वर्णन तथा धर्मकी वृद्धि और पापके क्षय होनेका उपाय ६३१०
३. व्यर्थ जन्म, दान और जीवनका वर्णन, सात्त्विक दानोंका लक्षण, दानका योग्य पात्र और ब्राह्मणकी महिमा ... ६३१३
४. बीज और योनिकी शुद्धि तथा गायत्री-जपकी और ब्राह्मणोंकी महिमाका और उनके तिरस्कारके भयानक फलका वर्णन ... ६३१८
५. यमलोकके मार्गका कष्ट और उससे बचनेके उपाय ... ६३२१
६. जल-दान, अन्नदान और अतिथि-सत्कारका माहात्म्य ... ६३२६
७. भूमिदान, तिलदान और उत्तम ब्राह्मणकी महिमा ... ६३३०
८. अनेक प्रकारके दानोंकी महिमा ... ६३३४
९. पञ्चमहायज्ञ, विधिवत् स्नान और उसके अङ्ग-भूत कर्म, भगवान्के प्रिय पुष्प तथा भगवद्भक्तोंका वर्णन ... ६३३७
१०. कपिला गौका तथा उसके दानका माहात्म्य और कपिला गौके दस भेद ... ६३४४
११. कपिला गौमें देवताओंके निवासस्थानका तथा उसके माहात्म्यका, अयोग्य ब्राह्मणका, नरकमें ले जानेवाले पापोंका तथा स्वर्गमें ले जानेवाले पुण्योंका वर्णन ... ६३४७

१२. ब्रह्महत्याके समान पापका, अन्नदानकी प्रशंसा-
का, जिनका अन्न वर्जनीय है, उन पापियोंका,
दानके फलका और धर्मकी प्रशंसाका वर्णन ६३५१
१३. धर्म और शौचके लक्षण; संन्यासी और
अतिथिके सत्कारके उपदेश; शिष्टाचार;
दानपात्र ब्राह्मण तथा अन्नदानकी प्रशंसा *** ६३५२
१४. भोजनकी विधि; गौओंको घास ढालनेका
विधान और तिलका माहात्म्य तथा ब्राह्मणके
लिये तिल और गन्ना पेरनेका निषेध *** ६३५६
१५. आपद्धर्म; श्रेष्ठ और निम्न ब्राह्मण; श्राद्धका
उत्तम काल और मानव-धर्म-सारका वर्णन ** ६३५८
१६. अग्निके स्वरूपमें अग्निहोत्रकी विधि तथा
उसके माहात्म्यका वर्णन *** ६३६२
१७. चान्द्रायणव्रतकी विधि; प्रायश्चित्तरूपमें
उसके करनेका विधान तथा महिमाका वर्णन ६३६६
१८. सर्वहितकारी धर्मका वर्णन; द्वादशीव्रतका
माहात्म्य तथा युधिष्ठिरके द्वारा भगवान्की
स्तुति *** ६३६९
१९. विषुवयोग और ग्रहण आदिमें दानकी महिमा;
पीपलका महत्त्व; तीर्थभूत गुणोंकी प्रशंसा और
उत्तम प्रायश्चित्त *** ६३७२
२०. उत्तम और अधम ब्राह्मणोंके लक्षण; भक्त;
गौ और पीपलकी महिमा *** ६३७६
२१. भगवान्के उपदेशका उपसंहार और द्वारका-
गमन *** ६३७७

चित्र-सूची

(तिरंगा)

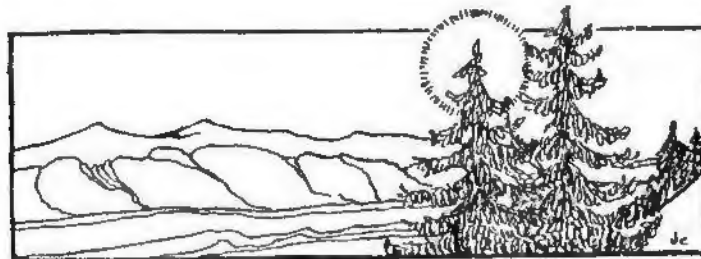
- १-अर्जुनका भगवान् श्रीकृष्णके साथ
प्रश्नोत्तर *** ६१३४
- २-भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा उत्तराके
मृत बालकको जिला देनेकी प्रतिज्ञा *** ६२२५
- ३-सर्वदेवमयी गो-माता *** ६३४८

(सादा)

- ४-महाराज भरतकी देवर्षिसे भेंट *** ६१०९
- ५-महाराज भरतका संवर्त मुनिसे संवाद *** ६१०९
- ६-ब्रह्माजीका ऋषियोंको उपदेश *** ६२०२
- ७-उत्तङ्क मुनिकी श्रीकृष्णसे विश्व-
रूप दिखानेके लिये प्रार्थना *** ६२१७

८-महारानी मदयन्तीका उत्तङ्कको

- कुण्डल-दान *** ६२२९
- ९-उत्तङ्कका गुरुपत्नीको कुण्डल-अर्पण *** ६२२९
- १०-भगवान् श्रीकृष्ण अपने पिता-माता आदिको
महाभारतका वृत्तान्त सुना रहे हैं *** ६२३१
- ११-अश्वमेधयज्ञके लिये छोड़े हुए
घोड़ेका अर्जुनके द्वारा अनुगमन *** ६२५५
- १२-अर्जुन अपने पुत्र बभ्रुवाहनको
छातीसे लगा रहे हैं *** ६२७४
- १३-महाराज युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें
एक नेवलेका आगमन *** ६२९३
- १४-महर्षि अगस्त्यकी यज्ञके समय प्रतिज्ञा *** ६३०४
- १५-(२० लाइन चित्र फरमोंमें)



आश्रमवासिकपर्व

अध्याय

विषय

पृष्ठ-संख्या

अध्याय

विषय

पृष्ठ-संख्या

(आश्रमवासपर्व)

- १-भाइयोंसहित युधिष्ठिर तथा कुन्ती आदि देवियों-
के द्वारा धृतराष्ट्र और गान्धारीकी सेवा ... ६३८३
- २-पाण्डवोंका धृतराष्ट्र और गान्धारीके अनुकूल
बर्ताव ... ६३८५
- ३-राजा धृतराष्ट्रका गान्धारीके साथ वनमें जानेके
लिये उद्योग एवं युधिष्ठिरसे अनुमति देनेके
लिये अनुरोध तथा युधिष्ठिर और कुन्ती
आदिका दुखी होना ... ६३८७
- ४-व्यासजीके समझानेसे युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको
वनमें जानेके लिये अनुमति देना ... ६३९३
- ५-धृतराष्ट्रके द्वारा युधिष्ठिरको राजनीतिका उपदेश ६३९४
- ६-धृतराष्ट्रद्वारा राजनीतिका उपदेश ... ६३९८
- ७-युधिष्ठिरको धृतराष्ट्रके द्वारा राजनीतिका उपदेश ६३९९
- ८-धृतराष्ट्रका कुरुजाङ्गल देशकी प्रजासे वनमें
जानेके लिये आज्ञा माँगना ... ६४०१
- ९-प्रजाजनोंसे धृतराष्ट्रकी क्षमा-प्रार्थना ... ६४०३
- १०-प्रजाकी ओरसे साध्वनामक ब्राह्मणका
धृतराष्ट्रको सान्त्वनापूर्ण उत्तर देना ... ६४०४
- ११-धृतराष्ट्रका विदुरके द्वारा युधिष्ठिरसे श्राद्धके
लिये धन माँगना, अर्जुनकी सहमति और
भीमसेनका विरोध ... ६४०८
- १२-अर्जुनका भीमको समझाना और युधिष्ठिरका
धृतराष्ट्रको यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति
प्रदान करना ... ६४१०
- १३-विदुरका धृतराष्ट्रको युधिष्ठिरका उदारतापूर्ण
उत्तर सुनाना ... ६४११
- १४-राजा धृतराष्ट्रके द्वारा मृत व्यक्तियोंके लिये
श्राद्ध एवं विशाल दान-यज्ञका अनुष्ठान ... ६४१२
- १५-गान्धारीसहित धृतराष्ट्रका वनको प्रस्थान ... ६४१३
- १६-धृतराष्ट्रका पुरवासियोंको लौटाना और पाण्डवोंके
अनुरोध करनेपर भी कुन्तीका वनमें जानेसे
न रुकना ... ६४१५
- १७-कुन्तीका पाण्डवोंको उनके अनुरोधका उत्तर ६४१७
- १८-पाण्डवोंका स्त्रियोंसहित निराश लौटना, कुन्ती-
सहित गान्धारी और धृतराष्ट्र आदिका मार्गमें
गङ्गा-तटपर निवास करना ... ६४१९

- १९-धृतराष्ट्र आदिका गङ्गातटपर निवास करके
वहाँसे कुरुक्षेत्रमें जाना और शतयूपके आश्रमपर
निवास करना ... ६४२१
- २०-नारदजीका प्राचीन राजर्षियोंकी तपःसिद्धिका
दृष्टान्त देकर धृतराष्ट्रकी तपस्याविषयक श्रद्धाको
बढ़ाना तथा शतयूपके पूछनेपर धृतराष्ट्रको
मिलनेवाली गतिका भी वर्णन करना ... ६४२२
- २१-धृतराष्ट्र आदिके लिये पाण्डवों तथा पुरवासियों-
की चिन्ता ... ६४२५
- २२-माताके लिये पाण्डवोंकी चिन्ता, युधिष्ठिरकी
वनमें जानेकी इच्छा, महर्षि और द्रौपदीका
साथ जानेका उत्साह तथा निवास और सेना-
सहित युधिष्ठिरका वनको प्रस्थान ... ६४२६
- २३-सेनासहित पाण्डवोंकी यात्रा और उनका
कुरुक्षेत्रमें पहुँचना ... ६४२८
- २४-पाण्डवों तथा पुरवासियोंका कुन्ती, गान्धारी
और धृतराष्ट्रके दर्शन करना ... ६४२९
- २५-संजयका ऋषियोंसे पाण्डवों, उनकी पत्नियों तथा
अन्यान्य स्त्रियोंका परिचय देना ... ६४३०
- २६-धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा
विदुरजीका युधिष्ठिरके शरीरमें प्रवेश ... ६४३२
- २७-युधिष्ठिर आदिका ऋषियोंके आश्रम देखना,
कलश आदि बाँटना और धृतराष्ट्रके पास
आकर बैठना, उन सबके पास अन्यान्य
ऋषियोंसहित महर्षि व्यासका आगमन ... ६४३५
- २८-महर्षि व्यासका धृतराष्ट्रसे कुशल पूछते हुए
विदुर और युधिष्ठिरकी धर्मरूपताका प्रतिपादन
करना और उनसे अभीष्ट वस्तु माँगनेके लिये
कहना ... ६४३७

(पुत्रदर्शनपर्व)

- २९-धृतराष्ट्रका मृत बान्धवोंके शोकसे दुखी होना
तथा गान्धारी और कुन्तीका व्यासजीसे अपने
मरे हुए पुत्रोंके दर्शन करनेका अनुरोध ... ६४३९
- ३०-कुन्तीका कर्णके जन्मका गुप्त रहस्य बताना और
व्यासजीका उन्हें सान्त्वना देना ... ६४४२
- ३१-व्यासजीके द्वारा धृतराष्ट्र आदिके पूर्वजन्मका
परिचय तथा उनके कहनेसे सब लोगोंका
गङ्गा-तटपर जाना ... ६४४४

३२-व्यासजीके प्रभावसे कुरुक्षेत्रके युद्धमें मारे गये
कौरव-पाण्डववीरोंका गङ्गाजीके जलसे प्रकट
होना *** ६४४५

३३-परलोकसे आये हुए व्यक्तियोंका परस्पर राग-
द्वेषसे रहित होकर मिलना और रात बीतनेपर
अदृश्य हो जाना; व्यासजीकी आज्ञासे विधवा
क्षत्राणियोंका गङ्गाजीमें गोता लगाकर अपने-
अपने पतिके लोकको प्राप्त करना तथा इस पर्वके
श्रवणकी महिमा *** ६४४७

३४-मरे हुए पुरुषोंका अपने पूर्व शरीरसे ही यहाँ
पुनः दर्शन देना कैसे सम्भव है ? जनमेजयकी
इस शङ्काका वैशम्पायनद्वारा समाधान *** ६४४९

३५-व्यासजीकी कृपासे जनमेजयको अपने पिताका
दर्शन प्राप्त होना *** ६४५१

३६-व्यासजीकी आज्ञासे धृतराष्ट्र आदिका पाण्डवोंको
विदा करना और पाण्डवोंका सदलबल
हस्तिनापुरमें आना *** ६४५२

(नारदागमनपर्व)

३७-नारदजीसे धृतराष्ट्र आदिके दावानलमें दग्ध हो
जानेका हाल जानकर युधिष्ठिर आदिका शोक *** ६४५६

३८-नारदजीके सम्मुख युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदिके
लौकिक अग्निमें दग्ध हो जानेका वर्णन करते
हुए विलाप और अन्य पाण्डवोंका भी
रोदन *** ६४५९

३९-राजा युधिष्ठिरद्वारा धृतराष्ट्र, गान्धारी और
कुन्ती—इन तीनोंकी हस्तियोंको गङ्गामें प्रवाहित
कराना तथा आत्मकर्म करना *** ६४६१

चित्र-सूची

(सादा)

१-विदुरका सूक्ष्मशरीरसे युधिष्ठिरमें प्रवेश

२-व्यासजीके द्वारा कौरव-पाण्डवपक्षके मरे हुए सम्बन्धियोंका सेनामहित परलोकसे आवाहन

३-(९ लाइन चित्र फरमोंमें)

*** ६४२५

*** ६४४६



मौसलपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-युधिष्ठिरका अपशकुन देखना, यादवोंके विनाशका समाचार सुनना, द्वारकामें ऋषियोंके शापवश साम्बके पेटसे मूसलकी उत्पत्ति तथा मदिराके निषेधकी कठोर आज्ञा	...	६४६३	५-अर्जुनका द्वारकामें आना और द्वारका तथा श्रीकृष्ण-पत्नियोंकी दशा देखकर दुःखी होना	...	६४७४
२-द्वारकामें भयंकर उत्पात देखकर भगवान् श्रीकृष्णका यदुवंशियोंको तीर्थयात्राके लिये आदेश देना	...	६४६५	६-द्वारकामें अर्जुन और वसुदेवजीकी बातचीत	...	६४७५
३-कृतवर्मा आदि समस्त यादवोंका परस्परसंहार	...	६४६७	७-वसुदेवजी तथा मौसल युद्धमें मरे हुए यादवोंका अन्त्येष्टि-संस्कार करके अर्जुनका द्वारकावासी स्त्री-पुरुषोंको अपने साथ ले जाना, समुद्रका द्वारकाको डुबो देना और मार्गमें अर्जुनपर डाकुओंका आक्रमण, अवशिष्ट यादवोंको अपनी राजधानीमें बसा देना	...	६४७७
४-दारुकका अर्जुनको सूचना देनेके लिये इस्तिनापुर जाना, बभ्रुका देहावसान एवं बलराम और श्रीकृष्णका परमधाम-गमन	...	६४७०	८-अर्जुन और व्यासजीकी बातचीत	...	६४८१

चित्र-सूची

१-बलरामजीका परमधाम-गमन	(तिरंगा)	६४७२
२-साम्बके पेटसे यदुवंश-विनाशके लिये मूसल पैदा होनेका ऋषियोंद्वारा शाप	(सादा)	६४७३
३-वसुदेवजी अर्जुनको यादव-विनाशका वृत्तान्त और श्रीकृष्णका संदेश सुना रहे हैं	(,,)	६४७६
४-(६ लाइन चित्र फरमोंमें)					

महाप्रस्थानिकपर्व

१-वृष्णिवंशियोंका श्राद्ध करके प्रजाजनोंकी अनुमति ले द्रौपदीसहित पाण्डवोंका महाप्रस्थान	...	६४८५	२-युधिष्ठिरका इन्द्र और धर्म आदिके साथ वार्तालाप, युधिष्ठिरका अपने धर्ममें दृढ़ रहना	...	६४९०
२-मार्गमें द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीमसेनका गिरना तथा युधिष्ठिरद्वारा प्रत्येकके गिरनेका कारण बताया जाना	...	६४८८	तथा सदेह स्वर्गमें जाना	...	६४९०

चित्र-सूची

१-अमिकी प्रेरणासे अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष और अश्वय तरकसको जलमें डाल रहे हैं (सादा)	...	६४८५
२-(२ लाइन चित्र फरमोंमें)		

स्वर्गारोहणपर्व

१-स्वर्गमें नारद और युधिष्ठिरकी बातचीत	...	६४९३	४-युधिष्ठिरका दिव्यलोकमें श्रीकृष्ण, अर्जुन आदिका दर्शन करना	...	६४९२
२-देवदूतका युधिष्ठिरको नरकका दर्शन कराना तथा भाइयोंका करुणक्रन्दन सुनकर उनका वहीं रहनेका निश्चय करना	...	६४९५	५-भीष्म आदि वीरोंका अपने-अपने मूलस्वरूपमें मिलना और महाभारतका उपसंहार तथा माहात्म्य	...	६४९४
३-इन्द्र और धर्मका युधिष्ठिरको सान्त्वना देना तथा युधिष्ठिरका शरीर त्यागकर दिव्य लोकको जाना	...	६४९९	१-महाभारत श्रवणविधि:	...	६४९९
			२-महाभारत-माहात्म्य	...	६४९७

चित्र-सूची

१-युधिष्ठिरका अपने आश्रित कुत्तेके लिये त्याग	(तिरंगा)	६४९३
२-देवदूतका युधिष्ठिरको मायामय नरकका दर्शन कराना	(सादा)	६४९७
३-(१ लाइन चित्र फरमोंमें)					